BA Part II (Soc/GM)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

Lecture V

सामाजिक समस्याओं की प्रकृति / विशेषताएं =)

सामाजिक समस्याओं को उनकी प्रकृति / विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

1) सामाजिक समस्याओं का उद्भव व्यक्ति => कोई भी सामाजिक समस्याएं अचानक उत्पन्न नहीं होती वरन् इसके उद्भव के पीछे कोई न कोई व्यक्ति अवश्य होता है। उदाहरण के लिए आत्महत्या को ले आत्महत्या अचानक सामाजिक समस्या नहीं बन गयी वरन् पहले किसी व्यक्ति ने आत्महत्या की होगी बाद में यह सम्पूर्ण समाज में फैल गया होगा।

2) सामाजिक समस्या समाज के स्वीकृत व्यवहार प्रतिमानों और मूल्यों के विरोध का प्रदर्शन है => जब कुछ सामाजिक मूल्य कुछ लोगों के हितों और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के आड़े आने लगते हैं तो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऐसे लोग व्यावहारिक रूप में इन मूल्यों का विरोध करने लगते हैं। यही विरोध सामाजिक समस्या बन जाती है।

2020-8-7 15:42

3) सामाजिक समस्या विघटन के सभी स्वरूपों से सम्बन्धित होते हैं - व्यक्तिगत वैयक्तिक विघटन को, परिवार विघटन व सामाजिक विघटन को, जातीय समाज की समस्या सामुदायिक विघटन को प्रभावित करती है।

4) सामाजिक समस्यायें सार्वभौमिक प्रकृति की होती हैं - सामाजिक समस्यायें विश्व के सभी समाजों में पाया जाता है। केवल यही की प्रत्येक समाजों में सामाजिक समस्यायें विभिन्न रूपों में होती हैं।

5) सामाजिक समस्याओं को पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सकता => किसी भी सामाजिक समस्या को पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सकता परन्तु उनकी दर को कम करने का प्रयास किया जा सकता है।

6) सामाजिक समस्याओं में सुधार सम्भव है => कोई भी सामाजिक समस्याएं कितनी भी जटिल क्यों न हों उनमें सुधार अवश्य संभव है।

उपर्युक्त प्रकृति / विशेषताओं के आधार पर सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

2020-8-7 15:42